पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.02.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-18 फाल्गुन-2082 दयानन्दाब्द 202 **16 फरवरी से 28 फरवरी 2026** (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.02.2026, **E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com**

202वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के आदर्शों को अपनाये –पूर्व महापौर डॉ. शैली ओबरॉय

महर्षि दयानन्द ने वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

प्रथम चित्र पूर्व महापौर डॉ. शैली ओबराय व द्वितीय चित्र में विधायक प्रवेश रत्न के अभिनंदन का दृश्य

तृतीय चित्र में पूर्व विधायक राजकुमार आनंद व चतुर्थ चित्र में दानवीर एस के आजमानी के अभिनंदन का दृश्य

यज्ञशाला एवं सभागार का सुन्दर दृश्य

वीरवार 12 फरवरी 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में महान समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का 202 जन्मोंत्सव आर्य समाज वेस्ट पटेल नगर नई दिल्ली में हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ के साथ किया गया। आर्य नेता जितेन्द्र आर्य (प्रधान आर्य समाज पटेल नगर) ने ध्वजारोहण कर समारोह का उद्घाटन किया। मुख्य अतिथि डॉ.शैली ओबराय (पूर्व महापोर) ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने की आवश्यकता है उनके संदेश आज भी प्रासंगिक है नारी जाति पर उनके ऊपकरो को भुलाया नहीं जा सकता। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया उनमें तर्क शक्ति का विकास किया और लोगों के सोचने समझने की दिशा ही बदल डाली। विधायक प्रवेश रत्न व पूर्व विधायक राज कुमार आनंद ने कहा आज उस महापुरुष को याद करने का दिन है जिन्होंने उस समय यह कहा था वेदों की ओर लौटो जब समाज में कुरीतियाँ फैली थी। महर्षि दयानन्द समग्र क्रांति के अग्रदूत थे, उन्होंने जातपात ऊंचनीच भुला कर समाज को जोड़ने का कार्य किया। डा .जयेंद्र आचार्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द एक क्रांतिकारी सन्यासी थे जिन्हें 202 वर्ष बाद भी याद किया जा रहा है स जो विश्वास स्वामी दयानंद को वेदों पर था उसे कैसे हम अपने आत्म विश्वास में ला सकते हैं ᑊ समारोह की अध्यक्षता आर्य नेता नरेंद्र आर्य सुमन ने की। गायिका पिंकी आर्या, प्रवीण आर्य,सुधीर बंसल, विजय पाहुजा, रमेश बेदी, नरेश चन्द्र आदि ने ऋषि गुणगान मधुर भजनों के माध्यम से किया। श्रीं राज कुमार आर्य, विजय कपूर, महेश शर्मा, मनोज मान, डालेश त्यागी ओम सपरा सुरेंद्र गुप्ता सुरेंद्र बुद्धीराजा यज्ञ वीर चौहान सुशील बाली आदि उपस्थित रहे। परिषद के राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र भाई ने धन्यवाद ज्ञापन किया

यदि ऋषि दयानन्द न आते?

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ऋषि दयानन्द का जन्म 12 फरवरी, 1825 को गुजरात राज्य के मोरवी जिले के टंकारा कस्बे में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री कर्षनजी तिवारी था। जब उनकी आयु का चौदहवां वर्ष चल रहा था तो उन्होंने अपने शिवभक्त पिता के कहने पर शिवरात्रि का व्रत रखा था। शिवरात्रि को अपने कस्बे के बाहर कुबेरनाथ के मन्दिर में पिता व स्थानीय कुछ लोगों के साथ उन्होंने रात्रि जागरण करते हुए चूहों को मन्दिर के अन्दर बने हुए बिलों से निकलकर शिवलिंग पर भक्तों द्वारा चढ़ाये गये अन्नादि पदार्थों का भक्षण करते हुए देखा था। इससे उनकी शिव की मूर्ति में श्रद्धा, विश्वास एवं आस्था समाप्त हो गई थी। उनमें सच्चे शिव को जानने व प्राप्त करने की इच्छा व संकल्प उत्पन्न हुआ था। उसके बाद उनकी बहिन व चाचाजी की मृत्यु होने पर उन्हें वैराग्य हो गया था। सच्चे शिव को जानने और जन्म व मृत्यु के बन्धन से मुक्त होने के लिए उन्होंने अपनी आयु के बाईसवें वर्ष में गृह त्याग कर दिया था। आरम्भ में वह गुजरात में अनेक स्थानों पर रहकर धार्मिक विद्वानों व योगियों के सम्पर्क में आये थे और उनसे अपने प्रश्नों का समाधान कराते रहे। संस्कृत भाषा का अध्ययन उन्होंने अपने माता–पिता के साथ रहते हुए किया था। उन्होंने सम्पूर्ण यजुर्वेद भी स्मरण किया था। अपने पिता का गृह त्याग करने के बाद अनेक स्थानों का भ्रमण करते समय उन्हें यदि कहीं कोई धार्मिक मान्यताओं विषयक ग्रन्थ मिलता था तो वह उसका अध्ययन भी करते थे। इसी क्रम में गुजरात सहित देश के अनेक भागों का भ्रमण उन्होंने अपने उद्देश्य ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानने व आवागमन से मुक्त होने के लिए किया। उन्हें योग के सच्चे गुरु मिले जिनसे उन्होंने योग सीखा। बाद में विद्यागुरु के रूप में उन्हें मथुरा के स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी मिले जिनसे उनकी विद्या की पिपासा शान्त व पूर्ण हुई। गुरु के परामर्श व प्रेरणा से उन्होंने समाज व देश से अविद्या दूर करने का संकल्प लिया और धर्म की जिज्ञासा में स्वतः प्रमाण ईश्वरीय ज्ञान चार वेदों का प्रचार व प्रसार आरम्भ किया। वह स्थान स्थान पर जाते और वहां उपदेश, शंका समाधान व शास्त्रार्थ करते थे। गुरु के उपदेश, वेद और शास्त्राध्ययन तथा अपने विवेक से मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष और मृतक श्राद्ध आदि को उन्होंने वेद, तर्क के विरुद्ध व असत्य पाया था। उनके समय में स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं था। स्त्रियों की सामान्य शिक्षा भी प्रायः बन्द थी। देश में वेदविरुद्ध जन्मना जाति–व्यवस्था प्रचलित थी जिससे मनुष्यों में परस्पर भेदभाव होने के साथ कुछ वर्गों का शोषण व उनके साथ अन्याय भी होता था। ऋषि ने इन सभी अज्ञान की बातों अर्थात् अन्धविश्वासों व सामाजिक अहितकर मान्यताओं का खण्डन किया और सत्य वैदिक मान्यताओं का प्रमाणपूर्वक मण्डन व प्रचार किया। लोग उनके उपदेशों से प्रभावित होने लगे व उन्हें अपनाने लगे। देश भर में हलचल हुई और सभी मतों के लोग स्वामी दयानन्द जी द्वारा मत–मतान्तरों की अविद्या पर किये जाने वाले प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाने के कारण उनके विरोधी बनते गये। स्वामी दयानन्द जी शास्त्रार्थ भी करते थे। प्रायः सभी प्रमुख मतों के आचार्यों से उनके शास्त्रार्थ हुए और सभी शास्त्रार्थों व वार्तालापों में अन्य मतों के विद्वान निरुत्तर होकर पराजित हो जाते थे।

स्वामी दयानन्द जी के समय में वेद प्रायः विलुप्त हो चुके थे। देश देशान्तर में वेदों का अध्ययन–अध्यापन कहीं नहीं होता था। वेदों के सत्य अर्थों का ज्ञान भी उनके समय के पण्डितों वा ब्राह्मणों को नहीं था। स्वामी जी ने वेदों का पुनरुद्धार किया। ऋग्वेद के प्रथम सात मण्डलों एवं यजुर्वेद के सभी 1875 मन्त्रों का संस्कृत व हिन्दी में भाष्य कर स्वामी जी ने उसे सामान्य व्यक्ति के अध्ययन व आचरण का विषय बनाया। स्वामी जी ने स्त्री व शूद्रों सहित प्रत्येक मनुष्य, स्त्री व पुरुष को, वेदों के पढ़ने पढ़ाने व सुनने सुनाने का अधिकार दिया जिससे वेदों पर एक वर्ग का एकाधिकार समाप्त हो सका और सभी लोग वेद पढ़ने व प्रचार करने लगे। उन्हीं के कारण पूरे विश्व में वेदों की प्रतिष्ठा हई। स्वामी दयानन्द जी ने सभी वर्णों के बालक व बालिकाओं के लिए निःशुल्क व एक समान शिक्षा की पैरवी की जिसमें संस्कृत व्याकरण के अध्ययन सहित वेदों का अध्ययन भी सम्मिलित था। स्वामी जी के शिष्यों ने उनकी मृत्यु के बाद गुरुकुल व डीएवी कालेज खोले, जो अब भी चल रहे हैं। इन विद्यालयों में स्वामी दयानन्द जी के विचारों व मान्यताओं के आधार पर शिक्षा दी गई व अब भी दी जाती है। ऋषि दयानन्द न आते तो वेदों का पुनरुद्धार न होता और न ही स्त्रियों और शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार मिलता। देश में शिक्षा के प्रचार प्रसार का आन्दोलन भी स्वामी जी के सत्यार्थप्रकाश में लिखे विचारों से आरम्भ हुआ। लोगों ने शिक्षा के महत्व को समझा और धीरे धीरे अपनी सन्तानों को पाठशालाओं वा स्कूलों आदि में भेजने लगे। यदि स्वामी दयानन्द न आते तो यह कार्य भी उस रूप में कदापि न हो पाता जैसा कि उनकी प्रेरणा से आरम्भ हुआ और अब इसका जन जन तक प्रसार हुआ है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेदों का पढ़ना, प्रचार करना और वेदों के अनुसार ही आचरण करना सभी मनुष्यों का परम धर्म है। यह बात स्वामी दयानन्द ने ही आर्यसमाज बनाकर उसके नियमों में कही है। स्वामी दयानन्द जी के अनुयायियों ने वेद पढ़े और प्रचार भी किया जिससे वैदिक धर्म की पूरे विश्व में प्रतिष्ठा हुई। वेदों व वेदों के आधार पर रचित ऋषियों के ग्रन्थ उपनिषद एवं दर्शन ग्रन्थों में ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरूप सहित इनके गुण, कर्म व स्वभावों का वर्णन है। प्रकृति के स्वरूप व गुणों आदि का वर्णन भी वेदों व वैदिक साहित्य में विस्तार से उपलब्ध है। वेदों को पढ़कर ही अज्ञानी व ज्ञानी मनुष्यों को ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य स्वरूप का ज्ञान हुआ व अब भी होता है। लोगों को ईश्वर की उपासना की सत्य विधि का ज्ञान हुआ और लोग ऋषि दयानन्द की बनाई सन्ध्या–यज्ञ पद्धति से सन्ध्या और यज्ञ करने लगे। आज संसार में लाखों लोग ऋषि दयानन्द की पद्धति से सन्ध्या व यज्ञ करते हैं। इसका श्रेय भी ऋषि दयानन्द जी को ही है। यदि वह न आते तो सन्ध्या व यज्ञ का विश्व स्तर पर ऐसा प्रचार न होता जैसा कि उन्होंने व उनके बनाये संगठन ने किया है। स्वामी जी के द्वारा ही लोगों के सम्मुख मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, अवतारवाद, वैदिक वर्णव्यवस्था, जन्मना–जातिवाद आदि का सत्यस्वरूप सामने आया। यदि वह न आते तो लोग इन विषयों में अज्ञान में फंसे रहते जैसा कि उनके समय तक फंसे हुए थे। ऋषि दयानन्द के कारण ही आज हम सच्चे ईश्वर को जान सके हैं व उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना कर ईश्वर के गुणों को प्राप्त होकर आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त हो रहे हैं। स्वामी दयानन्द जी ने बाल विवाह, बेमेल विवाह आदि का निषेध कर गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित विवाहों के प्रचलन पर बल दिया था। आज विवाह इसी आधार पर होने आरम्भ हो गये हैं। कम आयु की विधवाओं के पुनर्विवाह भी आर्यसमाज के प्रयासों से आरम्भ हुए थे। यदि स्वामी दयानन्द जी न आते तो इन कार्यों में सुधार न होता। जन्मना जातिवाद को भी स्वामी दयानंद जी ने वेद विरुद्ध घोषित किया था। वह सब मनुष्यों की एक ही जाति 'मनुष्य जाति' मानते थे। उनके व आर्यसमाज के प्रचार के कारण ही आज विद्वत समाज जन्मना जातिवाद के अभिशाप से बचने का प्रयत्न करते हुए देखे जाते हैं। देश के आजाद होने पर जन्मना जाति के आधार पर भेदभाव के विरुद्ध कानून भी बने हैं। संविधान की दृष्टि में सभी मनुष्य व जन्मना जातियां समान है। यह भी ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज की बहुत बड़ी देन है। युवक व युवतियों के विवाह भी आज गुण, कर्म व स्वभाव सहित स्वयंवर की रीति से जन्मना जाति तोड़कर हो रहे हैं। यह भी स्वामी दयानन्द के विचारों की विजय ही है।

स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश व अन्य ग्रन्थों के माध्यम से देश की आजादी का जो मन्त्र दिया था, उस आजादी को प्राप्त करने में उनके अनुयायियों ने सर्वाधिक योगदान किया है। स्वतन्त्रता आन्दोलन में गरम व नरम दल के शीर्ष पुरुष पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा और पं. गोपाल कृष्ण गोखले जी उनके विचारों से ही प्रभावित थे। गोखले जी महादेव रानाडे जी के शिष्य थे। यह रानाडे महोदय स्वामी दयानन्द जी के साक्षात् शिष्य थे। देश को आजाद कराने में आर्यसमाज और वेद के विचारों सहित आर्यसमाज के अनुयायियों की विशेष महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि स्वामी दयानन्द जी न आते तो देश को आजादी मिलती या नहीं, देश का क्या होता, ठीक से कहा नहीं जा सकता। स्वामी दयानन्द जी की सन् 1984 में प्रकाशित पुस्तक सत्यार्थप्रकाश में स्वदेशीय राज को सर्वोपरि उत्तम बताया था। उन्होंने कहा था विदेशी राज्य कितना भी अच्छा हो, पूर्ण सुखदायक नहीं होता। स्वामी दयानन्द जी के कारण देश में आजादी का आन्दोलन आरम्भ हुआ व देश आजाद हुआ। आजादी प्राप्ति में भी स्वामी दयानन्द के अनुयायिओं व समूचे आर्यसमाज संगठन का उल्लेखनीय योगदान है। उनकी मृत्यु के षडयन्त्र के कारणों में देश को आजाद कराने में उनके क्रान्तिकारी विचार भी सम्मिलित रहे। धार्मिक व सामाजिक शारीरिक सुधारों सहित देश की आजादी में स्वामी दयानन्द जी की वैदिक विचारधारा व विचारों सहित उनके अनुयायियों का महत्वपूर्ण योगदान है। यदि वह न आते तो इन सभी क्षेत्रों में देश की क्या स्थिति होती? इसकी कल्पना करना आसान नहीं है। जो भी होता, स्थिति वर्तमान से कहीं अधिक खराब ही होती, ऐसा हम अनुमान करते हैं।

स्वामी दयानन्द के आने से पूर्व देश के हिन्दुओं का ईसाई व मुस्लिम मत में बिना रोकटोक धर्मान्तरण व मतान्तरण किया जाता था। हिन्दू किसी विधर्मी के हाथ का पानी पी ले तो उसका धर्म नष्ट हो जाता था। किसी गांव के कुंवे में विधर्मियों ने गोमांस डाल दिया। अज्ञानतावश वहां के हिन्दुओं ने उस कुंवे का पानी पी लिया तब भी गांव के सभी हिन्दू, हिन्दू न रहकर, विधर्मी मान लिये जाते थे। हिन्दुओं का छल, कपट व प्रलोभन आदि के द्वारा धर्मान्तरण होता था। ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ लिखकर वैदिक मान्यताओं को प्रस्तुत किया। इसके साथ उन्होंने सभी मतों की मिथ्या मान्यताओं को प्रस्तुत कर उनका युक्ति व तर्क के आधार पर खण्डन व समीक्षा भी की है। इससे लोगों के सामने अन्य मतों की सत्य ज्ञान व वेद विपरीत मान्यताओं का प्रचार व प्रकाश हुआ। जहां भी धर्मान्तरण की घटनायें होती थी, वहां आर्यसमाज के विद्वान पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द जी व ऋषि के अनुयायी विद्वान पहुंच जाते थे और स्वजाति बन्धुओं को समझाते थे। वह विधर्मियों को शास्त्रार्थ की चुनौती देते थे। इससे

(शेष पृष्ठ 4 पर)

गोवा में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव सम्पन्न

गोवा प्रदेश में प्रथम बार आर्य प्रतिनिधि सभा गोवा के तत्वाधान में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्मदिन मनाया गया। प्रातः 7 बजे से वैदिक ज्ञान आश्रम जुआरी कॉलोनी गोवा में या प्रारम्भ हुआ जिसमें 3 हवन कुंडों पर लगभग 30 आर्यों ने आहुति प्रदान की। तत्पश्चात् सांय 4 बजे हुतात्मा चोक वास्को से अनेक मोटर साइकिलों और वाहनों पर ओ3म् ध्वज तथा महर्षि दयानन्द की बड़े–बड़े बैनरों के साथ शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई। वास्को सिटी के सभी मार्गों पर ऋषि दयानन्द अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे, भारत माता की जय से आकाश गुंजयमान हो गया। मार्ग में शोभा यात्रा को रोककर श्री सम्भा जी महाराज की मूर्ति के निकट इकट्ठे होकर उन्हें नमन करते हुए श्रद्धांजलि अप्रित की। इस प्रकाश लगभग 4 किलोमीटर का मार्ग तय करके शोभा यात्रा वायना बीच पर सम्पन्न हुई। नायना बीच पर हनुमान मन्दिर के पास समुद्र तट पर भव्य शामयाना तथा कुर्सी लगाकर लगभग 250 व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था की गई थी। ठीक 5.30 बजे 5 हवन कुंड लगाकर आचार्य राजेश ठक्कर जी के ब्रह्मत्व में तथा वास्को क्षेत्र के विधायक माननीय श्री संकलप अमोनकर और उनकी धर्मपत्नी को मुख्य अतिथि के रूप में यज्ञ कराया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य राजेश ठक्कर जी ने यज्ञ के लाभ बताते हुए कहा कि 'स्वर्गकामो यज्ञेत' अर्थात् इसलोक और परलोक में सुख विशेष की प्राप्ती के लिए हमें यज्ञ करना चाहिए ऐसा शास्त्रों का उपदेश है। आचार्य जी ने महर्षि दयानन्द के बाल्यकाल, शिक्षा तथा सामाजिक बुराईयों को दूर करने हेतु किए गये महान कार्यों की विस्तृत चर्चा की। ऋषि दयानन्द जी द्वारा लिखित पुस्तकों सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि तथा आर्याभिविनय आदि पुस्तकों को पढ़ने और उनपर आचरण करने की प्रेरणा दी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के कार्यकारी प्रधान श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने भी जनमानस को सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्त्री तथा शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिया। विधवाओं के पुर्नविवाह के वह प्रबल समर्थक थे उन्होंने शुद्धि आन्दोलन का प्रारम्भ करते हुए सर्वप्रथम देहरादून में एक तांगा चलाने वाले मुस्लिम का शुद्धिकरण करके उसका नाम अलखधारी रखा। अनेक कार्य को स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा श्री लेखराम ने आगे बढ़ाया। कन्या गुरुकुलों का शुभारम्भ स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया तथा उनके दूसरे शिष्य महात्मा हंसराज ने डी.ए.वी. कॉलेजों की विस्तृत श्रंखला पूरे भारतवर्ष में स्थापित कर दी। श्री शर्मा जी ने कहा कि स्वराज के प्रथम उदघोषक तथा स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रेरणा स्त्रोत महर्षि दयानन्द को हम श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए यज्ञ और वेद मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हें। आर्य प्रतिनिधि सभा गोवा के अति ओजस्वी तथा कर्मठ और समर्पित प्रधान पं. प्रवीणानन्द वैदिक जी ने भी अपने संबोधन में गोवावासियों से अनुरोध किया कि वह वैदिक ज्ञान आश्रम में उपस्थित होकर यज्ञ करने का निःशुल्क प्रशिक्षण लें तथा वैदिक साहित्य अवश्य पढ़े। इस अवसर पर उन्होंने पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई तथा छोटे–छोटे ट्रैक्ट निःशुल्क वितरित किए। इस सुन्दर आयोजन का पूरा श्रेय श्री प्रवीणानन्द वैदिक जी (प्रधान) श्री राजेश ठक्कर जी (मन्त्री), श्री विनोद पांडे जी (कोषाध्यक्ष), श्री परशुराम गणाचारी एवं श्रीमती स्वेता हजारे को जाता है। वैदिक जी की पूरी टीम सुन्दर आयोजन के लिए बधाई की पात्र है। अनेक संस्थाओं तथा श्री राजीव यादव जी, श्रीमती सरिता आर्य जी का विशेष आभार व्यक्त करते हैं।

– प्रेम प्रकाश शर्मा

द्विराष्ट्रवाद-की-विचारधारा-किसकी-देन-एक-समीक्षा

द्विराष्ट्रवाद के जनक कांग्रेसियो के मानस पिता सर सैयद अहमद खान थे। सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ रमेशचंद्र मजूमदार कहते हैं– "सर सैय्यद अहमद खान ने दो राष्ट्रों के सिद्धांतों का प्रचार किया जो बाद में अलीगढ़ आंदोलन की नींव बना। सर सैय्यद भले ही मुस्लिमों में अंग्रेज़ी शिक्षा के पक्षधर थे , पर मुस्लिम धर्म, इतिहास परंपरा, राज्य और उसके प्रतीकों और भाषा पर उन्हें बहुत अभिमान था। 1867 में अंग्रेज़ सरकार ने हिंदी और देवनागरी के प्रयोग का आदेश जारी किया। सर सैयद इस बात से बहुत बैचेन थे कि अब भारत में इस्लामी राज्य खोने के पश्चात हमारी भाषा भी गई। तब उन्होंने डिफेन्स ऑफ उर्दू सोसायटी की स्थापना की। डॉ इकराम ने कहा है कि आधुनिक मुस्लिम अलगाव का शुभारंभ सर सैय्यद के हिंदी बनाम उर्दू का मुद्दा हाथ में लेने से हुआ। 14 मार्च 1888 को मेरठ में दिए गए अपने भाषण में उन्होंने स्पष्ट कर दिया था कि हिंदू–मुस्लिम मिलकर इस देश पर शासन नहीं कर सकते। अपने भाषण में उन्होंने कहा– "सबसे पहला प्रश्न यह है कि इस देश की सत्ता किसके हाथ में आनेवाली है? मान लीजिए, अंग्रेज़ अपनी सेना, तोपें, हथियार और बाकी सब लेकर देश छोड़कर चले गए तो इस देश का शासक कौन होगा? क्या उस स्थिति में यह संभव है कि हिंदू और मुस्लिम कौमें एक ही सिंहासन पर बैठें? निश्चित ही नहीं। उसके लिए आवश्यक होगा कि दोनों एक दूसरे को जीतें, एक दूसरे को हराएँ। दोनों सत्ता में समान भागीदार बनेंगे, यह सिद्धांत व्यवहार में नहीं लाया जा सकेगा।" उन्होंने आगे कहा– "इसी समय आपको इस बात पर ध्यान में देना चाहिए कि मुसलमान हिंदुओं से कम भले हों मगर वे दुर्बल हैं, ऐसा मत समझिए। उनमें अपने स्थान को टिकाए रखने का सामर्थ्य है। लेकिन समझिए कि नहीं है तो हमारे पठान बंधु पर्वतों और पहाड़ों से निकलकर सरहद से लेकर बंगाल तक खून की नदियाँ बहा देंगे। अंग्रेज़ों के जाने के बाद यहाँ कौन विजयी होगा, यह अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है। लेकिन जब तक एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को जीतकर आज्ञाकारी नहीं बनाएगा तब तक इस देश में शांति स्थापित नहीं हो सकती।"

उन्होंने कहा कि भारत में प्रतिनिधिक सरकार नहीं आ सकती , क्योंकि प्रतिनिधिक शासन के लिए शासक और शासित लोग एक ही समाज के होने चाहिए।" मुसलमानों को उत्तेजित करते हुए उन्होंने कहा– "जैसे अंग्रेज़ों ने यह देश जीता वैसे ही हमने भी इसे अपने आधीन रखकर गुलाम बनाया हुआ था। ३अल्लाह ने अंग्रेज़ों को हमारे शासक के रूप में नियुक्त किया हुआ है। उनके राज्य को मज़बूत बनाने के लिए जो करना आवश्यक है, उसे ईमानदारी से कीजिए (अर्थात ऐसे काम करिए कि जिससे अंग्रेज भारत को छोड़ने सकें क्योंकि उनका यहां बने रहना ही मुसलमानों के हित में है)। आप यह समझ सकते हैं मगर जिन्होंने इस देश पर कभी शासन किया ही नहीं, जिन्होंने कोई विजय हासिल की ही नहीं, उन्हें (हिंदुओं को) यह बात समझ में नहीं आएगी। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि आपने बहुत से देशों पर राज्य किया है। आपने 700 साल भारत पर राज किया है। अनेक सदियाँ कई देशों को अपने आधीन रखा है। मैं आगे कहना चाहता हूँ कि भविष्य में भी हमें किताबी लोगों की शासित प्रजा बनने के बजाय (अनेकेश्वरवादी) हिंदुओं की प्रजा नहीं बनना है।"

2 दिसंबर 1887 को वह लखनऊ में मुस्लिम समाज के सामने यह बताते हुए स्पष्ट करते हैं कि किस तरह लोकतंत्र निरर्थक है? वे कहते हैं– "कांग्रेस की दूसरी माँग वाइसरॉय की कार्यकारिणी के सदस्यों को चुनने की है। समझो ऐसा हुआ कि सारे मुस्लिमों ने मुस्लिम उम्मीदवारों को वोट दिए तो हर एक को कितने वोट पड़ेंगे। यह तो तय है कि हिंदुओं की संख्या चार गुना ज़्यादा होने के कारण उनके चार गुना ज़्यादा सदस्य आएँगे, मगर तब मुस्लिमों के हित कैसे सुरक्षित रहेंगे। अब यह सोचिए कि कुल सदस्यों में आधे सदस्य हिंदू और आधे मुसलमान होंगे और वे स्वतंत्र रूप से अपने अपने सदस्य चुनेंगे। मगर आज हिंदुओं से बराबरी करनेवाला एक भी मुस्लिम नहीं है।"

उन्होंने आगे कहा– "पल भर सोचें कि आप कौन हैं? आपका राष्ट्र कौन सा है? हम वे लोग हैं जिन्होंने भारत पर छः–सात सदियों तक राज किया है। हमारे हाथ से ही सत्ता अंग्रेज़ों के पास गई। हमारा (मुस्लिम) राष्ट्र उनके खून का बना है जिन्होंने सऊदी अरब ही नहीं, एशिया और यूरोप को अपने पाँवों तले रौंदा है। हमारा राष्ट्र वह है जिसने तलवार से एकधर्मीय भारत को जीता है। मुसलमान अगर सरकार के खिलाफ आंदोलन करें तो वह हिंदुओं के आंदोलन की तरह नरम नहीं होगा। तब आंदोलन के खिलाफ सरकार को सेना बुलानी पड़ेगी, बंदूकें इस्तेमाल करनी पड़ेंगी। जेल भरने के लिए नए कानून बनाने होंगे।"

हमीद दलवई ने उनके बारे में कहा था– "1887 बद्रुदीन तैयबजी कांग्रेस के अध्यक्ष बने थे। उनसे कुछ मुद्धों पर सर सैयद के मतभेद थे। तब तैयबजी को लिखे पत्र में सर सैयद ने कहा था– "असल में कांग्रेस निशस्त्र गृहयुद्ध खेल रही है। इस गृहयुद्ध का मकसद यह है कि देश का राज्य किसके (हिंदुओं या मुसलमानों) हाथों में आएगा। हम भी गृहयुद्ध चाहते हैं मगर वह निशस्त्र नहीं होगा। यदि अंग्रेज़ सरकार इस देश के आंतरिक शासन को इस देश के लोगों के

(शेष पृष्ठ 4 पर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 770वां वेबिनार सम्पन्न

'महर्षि दयानन्द का वर्णीय कार्य विषय पर' गोष्ठी सम्पन्न

स्वदेशी के प्रथम समर्थक थे दयानन्द –विमलेश बंसल दर्शनाचार्या

सोमवार 09 फरवरी 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'महर्षि दयानन्द के वर्णीय काय' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।य़ह कोरोना काल से 769 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी आचार्या विमलेश बंसल ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने कहा था कोई कितना ही करे परंतु स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम है। साथ ही उन्होंने हिंदी को भी अपने जीवन में स्थान देने की बात रखी उन्होंने कहा कि हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो सबको जोड़ती हैं। मुख्य अतिथि कृष्णा पाहुजा व अध्यक्ष डॉ रचना चावला ने कहा कि नारी जाती को यज्ञोपवीत पहनने का वेद पढने का अधिकार नहीं था जो स्वामी दयानन्द जी ने दिलवाया। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने तर्क शक्ति का विकास किया और लोगों के सोंचने की दिशा व दशा ही बदल डाली प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, शोभा बत्रा, कमला हंस आदि ने महर्षि दयानन्द यशोगान भजनों के माध्यम से किया।

<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<

एक आर्य का पत्र-आर्यों के लिए

मेरा नाम अग्निदेव आर्य है।

मैं बांग्लादेश आर्य समाज केंद्रीय समिति का प्रचार संपादक हूँ। केंद्रीय आर्य युवक परिषद के 47वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय आर्य महा वेबिनार में बांग्लादेश आर्य समाज की ओर से आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ और अभिनंदन।

केंद्रीय आर्य युवक परिषद आज केवल भारत तक सीमित नहीं है। यह संस्था पूरे विश्व में सनातन वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसी कारण आज मुझे बांग्लादेश से आप सभी के सामने अपने विचार रखने का अवसर मिला है। पिछले चार दशकों से अधिक समय से केंद्रीय आर्य युवक परिषद आर्य समाज के युवाओं के बीच वैदिक आदर्शों, नैतिक शिक्षा और मानव–कल्याण के संदेश को निष्ठा के साथ फैलाती आ रही है। यह केवल एक युवक संगठन नहीं है, बल्कि एक आदर्श–आधारित आंदोलन है, जो युवाओं को सत्य, धर्म और ज्ञान के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। वर्तमान समय में जब समाज नैतिक पतन और मूल्य–बोध के संकट से गुजर रहा है, तब आर्य युवाओं की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। इस दायित्व को निभाते हुए केंद्रीय आर्य युवक परिषद समाज निर्माण में सराहनीय योगदान दे रही है।

मेरी यह सच्ची इच्छा है कि भारत के हर क्षेत्र में हमें आर्य समाज के प्रतिनिधि दिखाई दें। चाहे वह मंत्री परिषद हो, प्रशासन हो, शिक्षा हो, व्यापार–व्यवसाय हो, खेलकूद हो या फिर फिल्म जगतकृहर क्षेत्र में आर्य आदर्शों से प्रेरित व्यक्तित्व सामने आएँ। हमारा लक्ष्य होना चाहिए। हर घर में आर्य समाज का एक प्रतिनिधि तैयार करना।

मैं यह भी अपेक्षा करता हूँ कि भारत के प्रत्येक जिले में बड़े वैदिक गुरुकुल स्थापित हों और प्रत्येक राज्य में कम से कम दो–चार वैदिक विश्वविद्यालय हों। केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व के विभिन्न देशों में निजी स्तर पर ही सही वैदिक विद्यालय शुरू किए जाएँ।

गुरुकुल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के लिए सम्मानजनक रोजगार की व्यवस्था करना अत्यंत आवश्यक है। साथ ही, वैदिक विज्ञान और आधुनिक विज्ञान के समन्वय से शोध केंद्र स्थापित किए जाएँ, ताकि मानव कल्याण के नए मार्ग खुल सकें। मुझे पूरा विश्वास है कि ये सभी विषय केंद्रीय आर्य युवक परिषद की भविष्य की योजनाओं में शामिल हैं। आपकी सभी योजनाएँ सफल होंकृयही मेरी हार्दिक कामना है।

अंत में, मैं गर्व के साथ यह कहना चाहता हूँ कि बांग्लादेश आर्य समाज के संस्थापक आचार्य सुभाष शास्त्री जी के नेतृत्व में और आचार्य रवींद्रनाथ ठाकुर जी के महान त्याग के माध्यम से हमने लगभग 30 शतक भूमि पर एक केंद्रीय उपासनाालय और गुरुकुल की स्थापना की है। अनेक बाधाओं और कठिनाइयों के बावजूद हम पवित्र वेदों का प्रचार बांग्लादेश की धरती पर साहस के साथ करते आ रहे हैं।

आप सभी से आशीर्वाद की कामना करता हूँ, ताकि कितनी भी बाधाएँ आएँ, हम अपने इस पवित्र कार्य को निरंतर आगे बढ़ाते रह सकें। मेरे शब्दों में कोई भूल–चूक हुई हो तो कृपया क्षमा करें। सभी को नमस्ते।

(पृष्ठ 3 का शेष)

हाथों में सौंपना चाहती है तो राज्य सौंपने से पहले एक स्पर्धा परीक्षा होनी चाहिए। जो इस स्पर्धा में विजयी होगा , उसी के हाथों में सत्ता सौंपी जानी चाहिए। लेकिन इस परीक्षा में हमें हमारे पूर्वजों की कलम इस्तेमाल करने देनी चाहिए। यह कलम सार्वभौमत्व की सनदें लिखने वाली असली कलम है (यानी तलवार)। इस परीक्षा में जो विजयी हो, उसे देश का राज दिया जाए।"

सावरकर जैसे महान विचारक और इतिहास की गहरी समझ रखने वाले नेता ने सर सैयद अहमद खान की इस विचारधारा का पहले दिन से विरोध करना आरंभ किया। जबकि कांग्रेस अपनी तुष्टिकरण की नीति के अंतर्गत सर सैयद अहमद खान को शिक्षा क्षेत्र के महारथी और एक उदारवादी महान नेता के रूप में स्थापित करती रही। अलीगढ़ संस्थान के 1 अप्रैल 1890 के राज–पत्र में सर सैय्यद ने भविष्यवाणी की थी– "यदि सरकार ने इस देश में जनतांत्रिक सरकार स्थापित की तो इस देश के विभिन्न धर्मों के अनुयायियों में गृहयुद्ध हुए बिना नहीं रहेगा।" 1893 में एक लेख में उन्होंने धमकी दी थी– "इस राष्ट्र में मुस्लिम अल्पसंख्यक हैं लेकिन इसके बावजूद परंपरा यह है कि जब बहुसंख्यक उन्हें दबाने की कोशिश करते हैं तो वे हाथों में तलवारे ले लेते हैं। यदि ऐसा हुआ तो 1857 से भी भयानक आपत्ति आए बिना नहीं रहेगी।" सर सैयद अहमद खान की इसी अलगाववादी और द्विराष्ट्रवाद के सिद्धांत की जनक विचारधारा ने आगे चलकर जिन्नाह का निर्माण किया। जिसने धर्म के आधार पर इस देश का विभाजन करवाया और कांग्रेस ने उसे अपनी सहमति व स्वीकृति प्रदान कर देश के साथ अपघात किया। सावरकर जी ने सर सैयद अहमद खान और इन जैसे अलगाववादी नेताओं की चालों को बहुत पहले समझ लिया था। वह नहीं चाहते थे कि देश का किसी भी आधार पर बंटवारा हो। द्विराष्ट्रवाद की बात करने वाले सर सैयद अहमद खान जब 1887 में अपने भड़काऊ भाषण दे रहे थे , उस समय सावरकर जी मात्र 4 वर्ष के थे।

– डॉ. विवेक आर्य

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान
आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

(पृष्ठ 2 का शेष)

देश में छल, कपट व प्रलोभन से मतान्तरण कम हुआ और वेदों के ज्ञान की महत्ता के कारण अनेक विधर्मी आर्य व हिन्दू बने। इस कार्य को शुद्धि कहते हैं। इसे ऋषि दयानन्द जी व आर्यसमाज ने ही प्रवृत्त किया है। स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा पं. लेखराम जी के विचारों ने इसे गति दी थी। इससे हिन्दू मत व धर्म समाप्त होने से बच सका। इसका श्रेय भी ऋषि दयानन्द के आगमन व उनके कार्यों को ही है। ऋषि दयानन्द ने हिन्दू जाति की रक्षा के लिए अनेक उपाय किये। इस संक्षिप्त लेख में सबको बताया नहीं जा सकता। संक्षेप में इतना ही कह सकते हैं ऋषि दयानन्द ने प्रायः ज्ञानशून्य हिन्दू आर्य जाति में प्राण फूंक कर उसे पुनर्जीवित किया। उसे शिक्षा व संस्कार दिये। अहिंसा का यथार्थ अर्थ समझाया। लोगों को सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार और यथायोग्य व्यवहार करने की शिक्षा दी। दूसरों से यथायोग्य व्यवहार करना हिन्दू जाति भूल चुकी थी। इस सिद्धान्त को देने वाले भी ऋषि दयानन्द ही हैं। सत्य की रक्षा के लिए यथायोग्य व्यवहार अनेक परिस्थितियों में आवश्यक होता है। हम इतना ही कह सकते हैं कि ऋषि दयानन्द के आने से आर्य हिन्दू जाति प्राणवान व बलवान हुई व उसकी रक्षा हो सकी है।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.:** 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक :** दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970